सूक्ष्म ऋण और कैसे कोई लोक ऋण रजिस्ट्री इसे सुदृढ़ कर सकता है इसके संबंध में कुछ विचार*

विरल वी. आचार्य

कभी-कभी जब मैं नई चीजें लिखने बैठता हूँ तो वही पुराने ख्यालात मेरे दिमाग में आते हैं ठीक उसी तरह जैसे कोई पसंदीदा गाना मन-मस्तिष्क में इस तरह गहरे पैठ कर जाता है कि जब कोई किसी विषय पर सोच रहा हो तो वह बिना किसी वजह के अनायास ही गुनगुनाने लगता है। मेरे मामले में, मेरी आँखों के सामने कुछ अनोखे चित्र उभरते हैं। मैंने कोशिश की है कि इन चित्रों का वर्णन किस प्रकार किया जाए और उनके कोलाज मेरे लिए क्या मायने रखते हैं। वे यह भी बताते हैं कि मैं कैसे अर्थशास्त्र और वित्त के बारे में और सामान्य तरीके से सोचने की कोशिश करता हूं - जैसा कि मीडिया कई बार कुछ छोटे-मोटे तरीके से और कभी-कभी बड़े तौर-तरीके से हमारे आसपास के घर-परिवारों की दैनिक स्थितियों को समझने और इन स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की कोशिश करता है। बहरहाल, 'इकोनॉमिक्स' शब्द की व्युत्पति प्राचीन ग्रीक शब्द 'ओइकोनोमिया' से हुई है जिसका अर्थ 'घर-परिवार का प्रबंधन है। गहन शोध के आधार पर, कई लोग [मेस्सचुएट्स इंस्टीट्यूट्स ऑफ टेक्नोलोजी (एमआईटी) के विख्यात प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी एवं एस्थर डफलो] का स्पष्ट मानना है कि गरीब आदमी ही प्रायः सबसे बेहतर अर्थव्यवस्था को अमल में लाता है क्योंकि घर-परिवार का कुप्रबंधन उनके लिए काफी महंगा पड़ सकता है।

इसलिए मैं अपनी आँखों के समक्ष उभरते चित्रों का एक-एक कर वर्णन कर रहा हूं।

पहला चित्र: कई बार शाम में या रात जब मैं अपने भाई के साथ मुंबई में अपने छत पर चहलकदमी कर रहा होता हूँ तो एक तरफ पवन हंस हेलीपैड, नहरू नगर के बेतरतीब तरीके से फैली हुई झुग्गियाँ, स्वामी विवेकानंद रोड (एस वी रोड) की ओर से आने वाला शोरगुल, और जुहू तट की मंद-मंद हवा व लहरें हमारा अभिवादन करती हैं। मैं मुंबई में गिरगाँव की भीड़भाड़ वाली गली में पला-बढ़ा हूँ। हमारे बचपन का पसंदीदा मनोरंजन अपनी पहली मंजिल की खिड़की से यह देखना था कि कैसे लोग गलियों में अपनी जिंदगी तलाशते हैं। उसी अनुकूल, जब मैं छत पर जाता हूँ तो मेरी आँखें निरपवाद रूप से नेहरू नगर की झुग्गियों पर जाकर ठहर जाती है। संकीर्ण गलियों में दूर, घनी आबादी के बीच हलचल और जोश से भरपूर झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले हैं जो, लघु बिंब की भांति प्रतीत होते हैं जिनके चारों ओर काफी चहलपहल और सक्रियता है। एक आदमी अपने नीले छत पर डिश एंटीना लगा रहा है; एक वृद्ध जोड़ा मामूली झोंपड़ी के बाहर शायद स्वादिष्ट देशी चाट का आनंद ले रहा है; एक औरत बगल में रखे कपड़े को पटक-पटक कर धो रही है; और लगभग हमेशा बच्चे उल्लासपूर्ण धमाचौकड़ी मचाए रहते हैं, जिनमें से अधिकतर क्रिकेट खेल रहे होते हैं और मौसमी पतंगबाजी कर रहे होते हैं।

कई बार शाम में, एक विमान पूर्व में स्थित घरेलू या अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरता है और पश्चिम की ओर चला जाता है; और पवन हंस हेलीपैड के ऊपर चॉपर मंडराता है और तेज गड़गड़ाहट के साथ लैंड करता है। आधुनिक परिवहन के ये परिष्कृत साधन जब अपनी कोलाहलपूर्ण उपस्थिति का एहसास कराते हैं तो ऐसे में आप बच्चों को एक साथ झुंड में देख सकते हैं। उनमें से एक आकाश की ओर इशारा कर रहा होता है, वहीं अन्य जोश में आकार उसके चारों ओर घेर कर आश्चर्य से नजारा देखने लगते हैं। बेशक बाद में बच्चे निर्लिप्त भाव से गली क्रिकेट खेलने लौट जाते हैं या पतंग के पीछे भागने लगते हैं।

कोई यह आशा कर ही नहीं सकता है कि ये बच्चे - आश्चर्य के उस थोड़े क्षण में – महत्वाकांक्षी हो गए हैं; कि उनकी आँखें अब आसमान पर ही टिकी हुई हैं; यह कि इसके लिए उनके पास अवसर होगा और उन्हें अपनी संकीर्ण गली से दो कदम पर स्थित पवन हंस हेलीपैड और ऊपर उड़ने वाले विशाल

* डॉ. विरल वी. आचार्य, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का आईआईटी बॉम्बे टेक फेस्ट मुंबई में 15 दिसंबर 2018 को दिया गया भाषण।

मैं ये टिप्पणी अपने प्रिय स्कूल शिक्षक, मुंबई के फैलोशिप स्कूल के शैलेश शाह सर को समर्पित करता हूं, जिन्होंने 5 जनवरी, 2019 की सुबह अपनी अंतिम सांस ली; उन्होंने मुझे भारतीय भाषाएँ, सामाजिक विज्ञान और रचनात्मक लेखन की कला सिखाई; उन्होंने वास्तव में अपने सभी छात्रों के भीतर महत्वाकांक्षा जागृत करके हमें कल्पना से लबरेज कर दिया।

इन टिप्पणियों के कुछ हिस्सों को पहली बार 2017 में एक पुस्तक विमोचन के लिए तैयार किया गया था, इसके बाद कई छात्र समारोहों और कुछ दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण है। यह अंतिम संस्करण इन वार्ताओं में मेरी टिप्पणियों के संचय का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका समापन 15 दिसंबर, 2018 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे (आईआईटीबी) टेक फेस्ट में हुआ था। मैं अनुजित मित्रा, जोस कट्टूर और विनीत श्रीवास्तव के बहुमूल्य योगदान के लिए उनका आभारी हूं।

यांत्रिक पक्षियों के बीच की खाई को पाटने के लिए पूर्ण अवसर प्राप्त होगा।

क्या ये बच्चे उड़ान भर पाएंगे?
उनकी यात्रा कैसी होगी?
वे कहाँ उतरेंगे?

मैं कुछ सेकंड के लिए इस पर विचार करता हूं, लेकिन फिर मेरा ध्यान एस वी रोड पर वाहनों के लगातार बज रहे हॉर्न पर चला जाता है।

दूसरा चित्र : लगभग दस साल पहले तक मैं एक डॉक्टरेट छात्र के रूप में अपना अच्छा-खासा समय बीतता था, और बाद में पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा केंद्रित एक भारतीय गैर सरकारी संगठन के साथ काम करते हुए एक प्रोफेसर के रूप में। भारत के लिए यह कार्यकलाप मेरा जीवन आधार बन गया था। न्यूयॉर्क या लंदन से अपनी छुट्टियों में जब वापस घर आता था तो मैं शहरी इलाकों में उनके कुछ पालनाघरों का दौरा करने के लिए कुछ दिन निकालता था, और अगर यात्रा कार्यक्रम में समय रहता था तो मैं गांवों में त्वरित पठन कार्यक्रमों के आयोजन केन्द्रों पर भी जाता था। इन यात्राओं ने हितधारकों के साथ मेरी बातचीत को अधिक विश्वसनीय, आकर्षक और विशद बना दिया। लेकिन वे व्यक्तिगत रूप से भी सम्मान देने वाला थे।

पहली बार किसी बच्चे को वर्णमाला ढूँढने से ज्यादा प्रेरणादायी यदि कोई चीज है तो वह है पहली किताब को पढ़ना, असीम उत्साह और बावलापन के साथ पन्नों को बार-बार पलटना, या अपने पत्थरों के संग्रह को गिनना और जोड़ना, उसके बाद सटीक अंदाजा लगा लेना, जैसा कि महज खजाने पर एक नजर डाल कर बिना गिनती किए सटीक गणना कर लेना! यह बच्चे के चेहरे पर चमक हो सकती है, या कि “वाह!” अथवा उल्लास का क्षण हो सकता है क्योंकि चाहे यह कुछ भी हो बच्चा जब पढ़ना, गणना करना, सीखना शुरू करता है तो यह देखने वाले पर जादू कर देता है।

कोई कुछ और करने के जज्बे के साथ इन दौरों से लौटता है; किसी को महसूस होता है कि वह भारत के जीवन स्रोत को और पोषित करने का काम रहा है; किसी को लगता है कि इन यात्राओं, उड़ान और आरोहण के लिए आनंदपूर्ण शिक्षा आवश्यक पहलू है जिसे बच्चे यथासमय उत्तरदायित्व लेंगे।

तीसरा चित्र : सुबह-सुबह मैं आमतौर पर कार से आरबीआई कार्यालय या बॉम्बे जिमखाना के लिए रास्ते में रहता हूँ। मुझे वेस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे को जोड़ने वाले मिलन मेट्रो सबवे या अब फ्लाईओवर की ओर मुड़ने से पहले एस वी रोड पर रहना होता है। मोड़ से ठीक पहले, बाएं फुटपाथ पर, हनुमान मंदिर और सांताक्रूज बस डिपो पहुंचने से पहले, वहाँ हमेशा - एक माँ रहती है जो हर समय मेहनत कर रही होती है। यह स्पष्ट है कि वह बेघर है; उसके कम से कम दो बच्चे हैं, दोनों की उम्र लगभग एक ही है। सुबह के समय के अनुसार, उसे अपना काम बंद कर देना पड़ता है। कई दिन वह अपने चेहरे पर कुछ सख्ती के साथ बच्चों को जगा रही है; वहीं किसी दूसरे दिन जलापूर्ति वाले नल के पानी से वह उन्हें स्नान करा रही है; कई बार वह उन्हें स्कूल ड्रेस पहना रही है; और फिर वह पड़ोस के स्कूल की ओर अक्सर पीठ पर बैग रखे उन बच्चों के साथ भाग रही है। दूर से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका दिमाग एक ही जगह यह सुनिश्चित करने के लिए केंद्रित है कि उसके बच्चों को उड़ने और ऊंची उड़ान भरने का मौका मिले। एक माँ के रूप में उसकी भूमिका निश्चित रूप से महान लगती है, ठीक उसी तरह जैसा कि महाभारत में युधिष्ठिर ने इस यक्ष प्रशन का उत्तर दिया था कि पृथ्वी से भारी क्या है।

कैसे माँ यह सारा काम कर लेती है?
क्या वह किताबों और रसद का खर्चा उठा सकती है?
क्या बच्चों के वापस आने पर वह घर लौट आती है?
दिन भर वह क्या काम करती रहती है?
क्या वह सूक्ष्म उद्यमी हो सकती है?

हालांकि, मन इतना चंचल है कि ज्योंही कार ट्रैफिक सिगनल से बाएँ मुड़ती है और फ्लाईओवर की ओर बढ़ती है तो ये सारे प्रश्न पृष्ठभूमि में छूटते चले जाते हैं और रोजमर्रे के काम में लग जाते हैं।

चौथा चित्र : शनिवार सुबह-सुबह, चटकीली धूप निकल चुकी थी, एक बैंकर अपना थैला कंधे पर टाँगे हुए कच्चे-पक्के घरों के सामने वाली गली से गुजरता है। आस-पास का क्षेत्र अर्द्ध-शहरी है। पलक झपकते ही 20 से 50 वर्ष और कुछ 50 वर्ष से भी ज्यादा उम्र की महिलाएं, जो अधिकतर साड़ी में हैं, उसे घेर लेती हैं। उन सभी ने बैंकर से कुछ न कुछ रकम उधार

लिया हुआ है। वे एक-एक करके अपनी अदायगी करती हैं; प्रत्येक लेनदेन को एक रजिस्टर में दर्ज किया जाता है; प्वाइंट-ऑफ-सेल या पीओएस-स्टाइल मशीन से उनके बैंक कार्ड को डिजिटल रूप से स्वाइप भी किया जाता है। कुछ महिलाएं फिर से उधार ले रही हैं; कुछ अपने खातों से पैसा निकाल रही हैं। महीने भर के लिए नियुक्त महिलाओं के इस समूह का रजिस्ट्रार खाते में की गयी प्रविष्टियों की सावधानीपूर्वक जांच करने के बाद अभिलेख को बंद कर देता है।

बैंकिंग पूरी हुई। वृद्धि लगभग शुरू होने वाली है।

मैं उन महिलाओं के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक हूं कि वे उन पैसों का क्या कर रही हैं। निरपवाद रूप से वे सभी उद्यमी हैं। एक ने साड़ी की खरीद बिक्री का कारोबार शुरू किया है, उसे शहर से खरीद कर मुनाफे पर पड़ोस में बेच रही है; उसने कई वर्षों में अपने उद्यम को खड़ा किया है और उसे इस समूह में सबसे लंबे समय तक परिपक्वता (एक वर्ष) वाला सबसे बड़ा ऋण (एक लाख रुपये) मिला है; उसके दोस्त ने ऋण से एक सिलाई मशीन ली है और साड़ियों के मैच की ब्लाउज सिलाई कर रही है; एक दूसरे ने ब्यूटी पार्लर खोला है; वहीं एक अन्य ने अपने पति के स्टेशनरी स्टोर में सॉफ्ट-ड्रिंक का स्टॉल शुरू किया है क्योंकि वहाँ अतिरिक्त, अप्रयुक्त स्थान था, विशेष रूप से दोपहर के दौरान इसका उपयोग किया जाता है जब स्टेशनरी के लिए ग्राहक काफी कम रहते हैं लेकिन गर्मी असहनीय होती है। ऐसा लग रहा था कि उनके प्रभाव क्षेत्र में तत्काल सेवाएं प्रदान करने में कोई कमी नहीं है।

मैं यह जानने के लिए विशेष रूप से उत्सुक था कि इन महिलाओं को किस चीज ने पहली बार में उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया। मुझे जो उत्तर मिला वह पूरी तरह से अपेक्षित नहीं था: दस में से नौ मामलों में, महिलाएं इसलिए उद्यमी बन गई थीं ताकि वे अपने बच्चों को 'टॉप इंग्लिश मीडियम स्कूल' में भेज सके, या निजी कोचिंग हेतु अतिरिक्त पैसे कमा पाए ताकि बच्चा राज्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके, या बच्चे को कुछ कंप्यूटिंग और प्रोग्रामिंग सीखा सके क्योंकि यहीं पर भविष्य की नौकरियां हैं!

चित्रों का कोलाज

जब ये चित्र मेरी आँखों के सामने उभरे तो मुझे एहसास हुआ कि पूरी तरह से पूरक होने के बजाय, ये सभी चित्र आपस में जुड़े हुए थे, कि वित्त - मेरे दिन के काम, और इन चित्रों के बीच एक संबंध था जिसे मेरा मन अवचेतन रूप से सुबह, शाम और छुट्टियों में इकट्ठा कर रहा था। वित्तीय समावेशन से लेकर बच्चों की शिक्षा - महिला उद्यमियों के लिए सूक्ष्म वित्त से लेकर बच्चों को स्कूलों में भेजने तक में एक महत्वपूर्ण कड़ी स्थापित हुई है, बदले में बच्चों को पढ़ते और गिनती करते समय, और अनंत आकाश और उससे भी आगे की अपनी उड़ान भरने में लगता है कि "अहा!" मैंने यह कर दिया !!

वित्त तक पहुंच किसी अर्थव्यवस्था की जीवन शक्ति है। इसका विवेकपूर्ण निर्धारण अवसर और वृद्धि का द्वार खोलने के लिए जाना जाता है। यह वास्तव में, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, हमारे बच्चों की शिक्षा, हमारे युवाओं के कौशल को सपोर्ट करके, और दिमाग में जोश एवं कल्पना का संचार करके वृद्धि के लिए सबसे बुनियादी सुधार में सहायता कर सकता है ताकि वे खुद को, अपने परिवार को, बाकी हम सबको आगे बढ़ा सकें। कई परिवारों द्वारा शिक्षा को ऐसा जरिया माना जाता है जो उन्हें आर्थिक तनाव से बाहर निकाल देगा। मामूली अपवादों को दरकिनार कर दें तो वास्तव में शिक्षा इनसे उबरने का एक जरिया है।

अपने बच्चे के भविष्य को संवारने के लिए एक उद्यम करने वाली माँ के पास अपना कर्ज चुकाने की सभी इच्छाएँ होती हैं। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ेगा, उसकी ज़रूरतें भी बढ़ेंगी। उसे फिर से उधार लेने में सक्षम होने के लिए एक साफ-सुथड़े क्रेडिट रिकॉर्ड की आवश्यकता होगी ताकि उसकी अब बड़ी चलनिधि आवश्यकताओं को वित्तपोषित किया जा सके। इस तरह, उसके और वित्त प्रदाता के बीच पूर्ण प्रोत्साहन अनुकूलता है। चुकता करने की उसकी इच्छा के अलावा, समय के साथ शिक्षा का लाभ उठाने की आवश्यकता से प्रेरित, उसके उद्यम को कुशलता से चलाना उसके भुगतान करने की क्षमता को मजबूत करेगा। किसी भी दर पर, वित्तदाता एक छोटे ऋण के साथ शुरुआत कर सकता है, पुनर्भुगतान की क्षमता का आकलन करने के लिए एक छोटी अवधि का उपयोग कर सकता है, और उसके लिए बैंक खाते को खोल सकता है जो अन्य भुगतान प्रवाह को ट्रैक करने और क्रेडिट मूल्यांकन में सुधार करने में मदद कर सकता है। एक उधारकर्ता के रूप में महिला उद्यमी की प्रतिष्ठा तेजी से बढ़ सकती है क्योंकि वह पुनर्भुगतान करती रहती है और उसे लंबी अवधि के दौरान अधिक ऋण जुटाने में सक्षम बनाती रहती है।

किसी समूह के रूप में उधारी पुनर्भुगतान करने के लिए गहन प्रोत्साहन पर बल देता है; जब दूसरों द्वारा पुनर्भुगतान किया जा रहा है तो ऐसे में किसी एक उधारकर्ता द्वारा किया गया चूक बट्टा हो सकता है। इसके विपरीत, कुछ लोगों द्वारा चूक को प्रोत्साहित करने से अन्यथा समृद्ध ऋण संस्कृति बिगड़ सकती है।

इसके बदले में, वित्तदाता उधार लेने वाले फंडों की अपनी लागत पर एक स्वस्थ प्रसार कर सकता है, यहां तक कि शुरुआती चूक से कुछ नुकसानों का भी हिसाब लगा सकता है, जिसकी प्राप्ति पर उद्यमी को भविष्य के ऋण से सीमित किया जा सकता है या केवल सख्त ऋण शर्तों और कार्यकाल की पेशकश की जा सकती है।

इस तरह, सूक्ष्म उद्यमियों के लिए सूक्ष्म वित्त की उपलब्धता समाज को लाभान्वित करती है।[1]

अब मैं इन चित्रों से आरबीआई में अपने काम की ओर चलता हूं और हम यह सुनिश्चित करने के लिए क्या प्रयास कर रहे हैं कि सूक्ष्म ऋण अधिक उधारकर्ताओं के लिए उपलब्ध हो सके; सूक्ष्म वित्त को एक मजबूत आधार प्रदान किया गया; सूक्ष्म उद्यम को अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया गया; और अप्रत्यक्ष रूप से, इस प्रक्रिया में, हमारे बच्चों को स्कूली शिक्षा और हुनरमंद बनाने के लिए अधिक अवसर प्रदान किए गए।

लोक ऋण रजिस्ट्री (पीसीआर) – ऋण को लोकतांत्रिक और औपचारिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम[2]

भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में, यह हमेशा महसूस किया जाता है कि छोटे उद्यमी, जो ज्यादातर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के तहत काम करते हैं, उन्हें पर्याप्त ऋण नहीं मिलता है क्योंकि वे अपने उधारदाताओं के लिए सूचनात्मक रूप से अपारदर्शी हैं जो अधिक पारदर्शी बड़े व्यवसायों को ऋण प्रदान करना पसंद करते हैं। रिज़र्व बैंक के मूल सांख्यिकीय विवरणी (बीएसआर) से अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के मार्च 2018 तक के आंकड़ों से पता चलता है कि बकाया ऋण का लगभग आधा हिस्सा सौ मिलियन रुपये से ऊपर के टिकट आकार के लिए है और तीस प्रतिशत एक बिलियन रुपये से ऊपर है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के लिए ऋण व्यापन विशेष रूप से कम है जहां टिकट का आकार आमतौर पर एक से दस मिलियन रुपये के बीच माना जाता है। भले ही एससीबी वाले 95 प्रतिशत से अधिक खातों में ऋण सीमा एक मिलियन से कम हो, लेकिन इन खातों पर बकाया राशि कुल बकाया का सिर्फ 23 प्रतिशत ही है।

क्या हमारे लिए भविष्य में अपने ऋण पारिस्थिकी को नए सिरे से तैयार करने और उस पर पुनर्विचार करने का एक बड़ा अवसर है, ताकि सूक्ष्म ऋण के आर्थिक मूल्य को तलाश करने में कामयाब हो सके ठीक उसी प्रकार जैसा कि मैंने अपने चित्रों के कोलाज में एक खांका खिचा है?

रिजर्व बैंक में, हम दृढ़ता से ऐसा मानते हैं। हमने लोक ऋण रजिस्ट्री (पीसीआर) पर काम शुरू किया है। हम इस बात को लेकर उत्साहित हैं कि हम सूक्ष्म उद्यमियों के लिए क्रेडिट तक पहुंच को प्रभावित करने वाली सूचना की समस्या को किस तरह से हल कर सकते हैं।

अब मैं सूचना की समस्या के बारे में विस्तारपूर्वक बताता हूँ और और कैसे पीसीआर इसको सुलझाने में मदद कर सकता है।

ऋण देते समय ऋणदाता के समक्ष प्रमुख कठिनाई उधारकर्ता की सूचना विषमता की होती है। सीधे शब्दों में कहें तो उधारकर्ता के पास ऋणदाता की तुलना में अपनी आर्थिक स्थिति और जोखिमों के बारे में अधिक जानकारी होती है। ऋण सूचना प्रणाली का उद्देश्य पिछले ऋणदाताओं और उधारकर्ता की वर्तमान ऋणग्रस्तता के साथ ऋण इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए ऋणदाता को सक्षम करके इस विषमता को कम करना है। वे ऋण आवंटन की दक्षता में सुधार करते हैं, क्योंकि ऋणदाता ऋण सूचना प्रणालियों का उपयोग उचित रूप से भेद करने और समुचित रूप से मूल्य निर्धारण (ब्याज दर) करने के साथ-साथ ऋण की शर्तों (परिपक्वता, संपार्श्विकता, अनुबंध आदि) को बदलने के लिए कर सकते हैं।

ऋण सूचना प्रणाली के बिना क्या होगा?

जहां उधारकर्ता के ऋण का विवरण तैयार होता हैं, वहीं उधारदाता अपने लाभदायक ग्राहकों की जानकारी की रक्षा करना चाहते हैं और अन्य उधारदाताओं के साथ इसे सीधे साझा करने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं। इस तरह, उधारकर्ता अपने शुरुआती ऋणदाताओं तक ही सीमित हो सकते हैं, ऋण की शर्तों के चंगुल में फंस सकते हैं, और इससे भी बदतर, यदि मौजूदा

[1] छात्र सभा और दीक्षांत समारोह में से कुछ में, मैंने 22 दिसंबर 2017 को युवराज गलाडा से प्राप्त "द इनविटेशन" नामक कविता का पाठ करके यहाँ टिप्पणी को समाप्त किया। यह कविता 1999 में ओरियाह माउंटेन ड्रीमर द्वारा लिखी गई थी, जिसने मुझे बहुत प्रेरित किया।

[2] इस विषय को पूरी तरह से समझने के लिए, अगस्त 2018 में दिए गए मेरे भाषण "पब्लिक क्रेडिट रजिस्ट्री (पीसीआर) और गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स नेटवर्क (जीएसटीएन): जाइंट स्ट्राइड्स टू डेमोक्रिटाइज़ एंड फॉर्मलाइज़ क्रेडिट इन इंडिया" देखें।

ऋणदाता को खुद की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तो नए उधारदाताओं को अपनी ऋण गुणवत्ता बताने में असमर्थ हो जाते हैं (जैसे कि हानियों की पहचान की वजह से पूंजी क्षरण होना जो कि पिछले एक दशक में भारत में बड़े कॉर्पोरेट उधारकर्ता के ऋण के अनर्जक में तबदील होने के प्रभाव की वजह से उच्च खुदरा और बैंकों से एमएसएमई की उधारी लागत के रूप में देखने को मिला था)।

यहीं पर थर्ड-पार्टी क्रेडिट इन्फ़ॉर्मेशन कंपनियों की बात आती है, जो कि उधारदाताओं से डेटा लेकर उसे इकट्ठा करेंगे और निर्धारित पॉलिसी के अनुसार अन्य उधारदाताओं के साथ इस जानकारी को साझा करेंगे। वैश्विक स्तर पर प्राइवेट क्रेडिट ब्यूरो (पीसीबी) और पब्लिक क्रेडिट रजिस्ट्रिज (पीसीआर) दोनों इस क्षेत्र में काम कर रही हैं। पीसीबी को ऋण संबंधी डेटा प्राप्त करने के लिए विधायी रूप से अधिकृत किया जा सकता है; हालाँकि, लाभकारी उद्यम होने के कारण वे मुख्य रूप से उन डेटा सेगमेंट की ओर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो एक कारोबारी मॉडल का निर्माण करने के लिए सबसे अधिक लाभदायक हो (जैसे, एकत्रित आंकड़ों के आधार पर क्रेडिट स्कोर का प्रावधान)। वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह पाया गया है कि पीसीबी की तुलना में कोई पीसीआर, एक गैर-लाभकारी उद्यम होने के नाते बेहतर डेटा कवरेज सुनिश्चित करने में सक्षम है। बदले में, पीसीबी को जब पीसीआर के व्यापक डेटा तक पहुंच प्रदान किया जाए तो यह पीसीआर को पूरक बनाकर डेटा विश्लेषण और नवाचारों के माध्यम से बेहतर और अधिक मूल्यवर्धन कर सकता है।

जहां कोई भी आसानी से इसे उपयोगी समझ सकता है, वहीं क्रेडिट सूचना प्रणालियों के लिए पूरी क्रेडिट जानकारी इकट्ठा करना महत्वपूर्ण है, संभवतः यहां तक कि आस्ति और नगद-प्रवाह विवरण के बारे में भी, जिसे कभी-कभी '360-डिग्री व्यू' के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, नवीनतम जानकारी अधिक महत्वपूर्ण है, जो सन्निकट-वास्तविक-समय डेटा की मांग को बढ़ा देती है। श्री वाई.एम. देवस्थली की अध्यक्षता में भारत के लिए लोक ऋण रजिस्ट्री से संबंधित उच्च-स्तरीय कार्य बल (एचटीएफ) की रिपोर्ट में लोक ऋण रजिस्ट्री के इसी प्रकार के होने की परिकल्पना की गयी है। एचटीएफ ने भारत में वर्तमान क्रेडिट सूचना प्रणाली में डेटा अंतराल की जांच की और उपयुक्त अधिनियम द्वारा समर्थित एक पीसीआर की स्थापना किए जाने की सिफारिश की ताकि ऋण बाजार की सूचना दक्षता में सुधार हो सके और भारत में ऋण संस्कृति को मजबूत किया जा सके।

भारत के लिए लोक ऋण रजिस्ट्री (पीसीआर) कैसे काम करेगी?

पीसीआर की परिकल्पना मूलभूत ऋण सूचना के डेटाबेस के रूप में की गई है – यह एक तरह का इन्फ्रास्ट्रक्चर होगा,जिस पर क्रेडिट डेटा के उपयोगकर्ता आगे का विश्लेषण कर सकते हैं। यह सभी विनियमित संस्थाओं (यानी, वित्तदाताओं) को चरणवार कवर करने का प्रयास करेगा और इस तरह से उधारकर्ताओं के बारे में समग्र दृष्टिकोण प्राप्त कर सकता है। यह कॉर्पोरेट फाइलिंग, कर प्रणाली (वस्तु एवं सेवा नेटवर्क या जीएसटीएन सहित), और उपयोगिता भुगतान सहित बैंकिंग प्रणाली से इतर संबंधित अनुषंगी सूचना प्रणाली के साथ जुड़ने की सुविधा प्रदान करेगा। पीसीआर को सरकार के परामर्श से लाए जाने वाले एक व्यापक लोक ऋण रजिस्ट्री अधिनियम द्वारा समर्थित और शासित होना पड़ेगा। इसे निर्धारित गोपनीयता फ्रेमवर्क के आधार पर नवीनतम गोपनीयता दिशानिर्देशों का पालन करना होगा।

प्रस्तावित लोक ऋण रजिस्ट्री (पीसीआर) की सूचना संरचना

अब मै पीसीआर पर कुछ प्रकाश डालूँगा कि यह कैसे काम करेगा और कैसे ऋण संस्कृति को मजबूत करने में मदद करेगा।

(1) पहला, पीसीआर उधारदाता संस्थाओं की बढ़ती कवरेज के साथ उधारकर्ता की जानकारी को और अधिक संपूर्ण बनाएगा। विशेष रूप से, इसकी पहुँच अंततः सबसे छोटी प्राथमिक कृषि ऋण समितियों तक भी होगी। यह उन संस्थाओं को भी कवर करेगा, जिन्हें आरबीआई द्वारा विनियमित नहीं किया जा सकता है। यह चरणवार किया जाना चाहिए और इसे पूरा करने में तीन से पांच साल लग सकते हैं, संभवतः जल्दी भी हो सकता है।

(2) दूसरा, पीसीआर बड़े पैमाने पर उधारदाताओं के संबंध में रिपोर्टिंग को सरल बना देगा और इसके बोझ को कम करेगा। नियामकों और पर्यवेक्षकों सहित अन्य संस्थाएं इसे मूलभूत ऋण जानकारी के लिए इसका उपयोग करने में सक्षम होंगी और इसे अपनी आवश्यकता के अनुसार केवल वृद्धिशील पक्ष के साथ पूरक जोड़ सकेंगी। आरबीआई द्वारा वर्तमान में एकत्र किए गए कई सांख्यिकीय विवरणी को भी तदनुसार ठीक से तर्कसंगत बनाया जा सकता है और इसकी छंटनी की जा सकती है जिससे डेटा संग्रह, अनुसरण और शोधन में दोहराए गए प्रयासों के बजाय विश्लेषण के लिए वित्तीय पारिस्थिकी-तंत्र में संसाधनों को मुक्त किया जा सकता है।

प्रस्तावित लोक ऋण रजिस्ट्री (पीसीआर) सूचना ढांचा

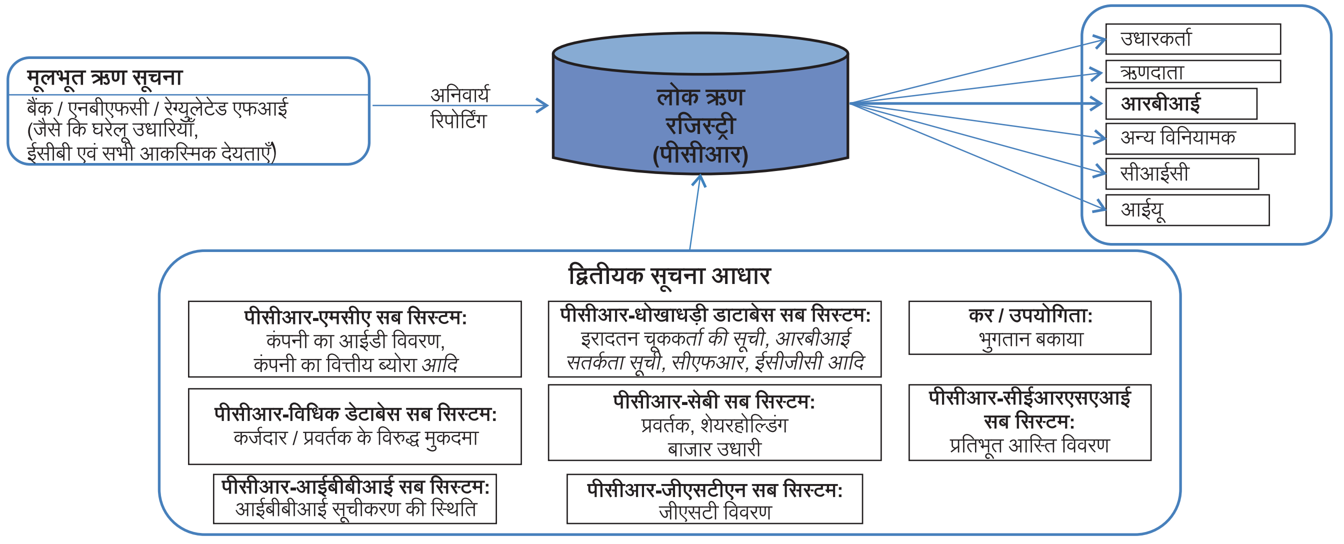

स्रोत : भारत के लिए लोक ऋण रजिस्ट्री से संबंधित उच्च स्तरीय कार्य बल की रिपोर्ट, 2018।

अन्य संस्थाओं के मामले में भी ऐसा ही होगा जो वर्तमान में बैंकों से इस तरह के डेटा एकत्र करते हैं।

(3) तीसरा, पीसीआर में ऋण संबंधी आंकड़े वर्तमान की तुलना में अधिक बारंबारता पर डिजिटल रूप से उपलब्ध होंगे। इसलिए, इससे ऋण संबंधी निर्णय लेने में तेजी और दक्षता आएगी।

(4) चौथा, जैसा कि यहां चार्ट से पता चलता है, कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए21) के कॉर्पोरेट डेटा और टैक्स फाइलिंग या चालान डेटा (जीएसटीएन) जैसे अन्य सूचना प्रणालियों को लिंक करने से यह उपयोगकर्ताओं को उधारकर्ताओं की आस्तियों एवं बढ़ते नगदी प्रवाह से संबंधित अन्य आंकड़े हासिल करने में मदद करेगा, जो कुशल ऋण संबंधी निर्णय लेने के लिए आवश्यक हैं।

(5) अंत में, वर्तमान में जो भी संभव है उससे बेहतर तरीके से पीसीआर संरचना के भीतर गोपनीयता संबंधी चिंताओं को दूर करना और समुचित उपयोग के लिए उचित सहमति-आधारित फ्रेमवर्क के साथ डेटा तक पहुंच को नियंत्रित करना संभव होगा। इन चिंताओं को इस उद्देश्य को संतुलित करना होगा कि पीसीआर ऋण के लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक कदम मात्र है, जिसके ऋण संबंधी आंकड़ों का उपयोग न केवल विनियामकीय / पर्यवेक्षी उद्देश्यों के लिए किया जाता है, बल्कि ऋण बाजार को कुशलतापूर्वक विस्तार करने के लिए भी किया जाता है। विशेष रूप से,

ए. जहां किसी व्यक्ति के पास पीसीआर में संग्रहीत उसके डेटा तक उसकी पहुंच होगी, वहीं उसे ऋण प्राप्त करने के लिए इसे अन्य उधारदाताओं के साथ साझा करने का अधिकार भी होना चाहिए।

बी. इसी तरह, उधारदाताओं को ऐसे खातों की निगरानी के लिए अपने खुद के ग्राहकों के संपूर्ण डेटा तक पहुंच दिए जाने की जरूरत होगी।

सी. नियामकों / पर्यवेक्षकों को अपने काम के लिए डेटा तक पूर्ण पहुंच अपेक्षित होगा ताकि वे समग्र दृष्टिकोण का लाभ उठाकर प्रणालीगत जोखिम चिंताओं को दूर कर सकें।

अपेक्षित पहुंच और नियंत्रण नीतियों को समुचित रूप से लागू करने के लिए उच्च-स्तरीय टास्क फोर्स ने अलग से एक लोक ऋण रजिस्ट्री अधिनियम (पीसीआर अधिनियम) लाए जाने की सिफारिश की है। पीसीआर अधिनियम को जहां एक तरफ डेटा की पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता होगी, वहीं दूसरी तरफ ऋण संबंधी आंकड़ों के साझा करने के संबंध में मौजूदा प्रतिबंधों को भी ध्यान में रखना होगा जो ऋण के प्रभावशाली आवंटन और विनियामक पर्यवेक्षण से रोकते हैं। पीसीआर अधिनियम को व्यापक भी बनाना होगा ताकि उन उधारदाताओं से भी डेटा लिया जा सके जो सीधे आरबीआई के विनियमों के तहत नहीं आते हैं। इसके लिए, आने वाले महीनों में आरबीआई की सरकार

और अन्य नियामकों के साथ बातचीत करने की योजना है। इस बीच, आरबीआई ने एक कार्यान्वयन कार्यबल का गठन किया है जो विनियमित संस्थाओं से प्राप्त आंकड़ों के साथ पीसीआर को शुरू करने के लिए सिस्टम इंफ्रास्ट्रक्चर को ठीकठाक कर रहा है, जिसे दोनों के अंतर्गत अथवा मामूली सुधार के साथ मौजूदा विधायी फ्रेमवर्क के तहत कवर किया जा सकता है।

लोक ऋण रजिस्ट्री सूक्ष्म ऋण का " छोटे-छोटे पैकेज (सूची)" बनाने में मदद कर सकता है

व्यक्तियों और छोटे क्रेडिट हेतु ऋण मॉडल तैयार करने के लिए वित्तदाताओं और उसके लिए मॉडल बनाने वाले को सूक्ष्म उधारकर्ताओं के न केवल बकाया ऋण, बल्कि संभवतः उनके पूरे पुनर्भुगतान का इतिहास और उनके नकदी प्रवाह में उतार-चढ़ाव जानने की भी आवश्यकता होती है ताकि उपयुक्त रूप से ऋण की शर्तों को पूरा किया जा सके। इस तरह की जानकारी के अभाव में कई उधारकर्ताओं को वित्तदाताओं द्वारा सामना की जाने वाली गंभीर सूचना विषमता के कारण आसानी से बाजार से 'बाहर' होना पड़ सकता है।

पीसीआर द्वारा ऋण शुरू होने से लेकर उसके बंद होने तक यानी ऋण संबंधी प्रत्येक लेनदेन (प्रारंभिक शर्तें, चूक, पुनर्गठन, आदि) पर नज़र रखने से और विभिन्न डिजिटल प्रणालियों से जुड़े होने से (जैसा कि ऊपर चार्ट में दर्शाया गया है) यह पहचान करना और कारोबारों, यहाँ तक कि सूक्ष्म उद्यमों एवं सूक्ष्म उद्यमियों को अच्छी तरह से जान पाना संभव होगा। दूसरे शब्दों में, पीसीआर वह लुप्त कड़ी उपलब्ध करा सकती है, जो उधारकर्ता या भावी उधारकर्ता की पूरी जानकारी अर्थात '360-डिग्री व्यू' देती है। यह उधारदाताओं को नकदी प्रवाह की व्यवहार्यता को ध्यान में रखते हुए उधारकर्ता के ऋण जोखिम का आकलन करने, प्रासंगिक प्रश्न पूछने (जैसे, क्या कोई अन्य अंतर्निहित मुद्दे हैं जो सूक्ष्म उद्यम से अच्छे-खासे नकदी प्रवाह के बावजूद ऋण का भुगतान करने की क्षमता को प्रभावित कर रहे हैं?), और समुचित सावधानी से कोई समझौता किए बिना ऋण शर्तों का निर्धारण करने की अनुमति देगा।

इन सबके आधार पर, लगभग स्वचालित ऋण मंजूरी और संवितरण तंत्र तैयार किए जा सकते हैं, जैसा कि फिन-टेक कंपनियों द्वारा भी इसकी कोशिश की जा रही है।

वास्तव में, ऋण उत्पाद में अल्प परिपक्वता और शून्य या कम संपार्श्विक अपेक्षा वाले छोटे राशि के ऋण को मंजूरी देने की संभावना से बदलाव लाया जा सकता है। उधारकर्ता और उद्यमी इस तरह के प्रारंभिक सूचना-निर्माण ऋणों को चुकाकर अपनी प्रतिष्ठा और ऋण गुणवत्ता का निर्माण कर सकते हैं। धीरे-धीरे, वे लंबी अवधि की परिपक्वता पर और अधिक उधार ले सकते हैं जिससे वे उत्पादकता बढ़ाने के लिए संभवतः पूंजी निवेश कर सकते हैं। एक बार जब उनका आकार बढ़ जाता है और वे जीएसटीएन के साथ पंजीकृत हो जाते हैं, तो कर चालान पीसीआर के साथ नकदी-प्रवाह के सत्यापन के रूप में कार्य कर सकते हैं। समय के साथ तैयार हुई सुदृढ़ ऋण विवरण उधारदाताओं के विश्वास को बढ़ाते हुए मजबूत संपार्श्विक के रूप में काम कर सकता है। ऋण का इस तरह के 'छोटे-छोटे पैकेट तैयार होने' से उन सूक्ष्म और लघु उद्यमों तक ऋण तेजी से पहुँच सकता है जो औपचारिक ऋण बाजार में अब तक शामिल नहीं हैं।

यह महत्वपूर्ण होगा कि उधारकर्ताओं को ऋण नहीं चुकाने के लिए इसे आसान बनाकर उनकी स्वाभाविक रूप से मजबूत ऋण संस्कृति को कमजोर न करें, जैसा कि मैंने सूक्ष्म उद्यमियों के भुगतान करने की सक्षमता और इच्छा का जिक्र करते हुए इस पर जोर दिया है। यह इस बात के मूलतत्व से समझौता करने जैसा होगा कि कैसे सूक्ष्म उद्यमी एक प्रतिष्ठित ऋण विवरण का निर्माण करने के लिए दूसरों से विभेद करते हैं और समय के साथ आकार और आर्थिक मूल्य सृजन में वृद्धि करते हैं।

अब मैं निष्कर्ष पर आता हूँ।

शुरुआत में मैंने जिन चित्रों और मेरे दिमाग में बने उनके कोलाज की चर्चा की थी उनमें और रिजर्व बैंक में मेरे काम के बीच एक गहरा रिश्ता है। अंततः, जहां केंद्रीय बैंक हमेशा आम आदमी के नजर में नहीं होते हैं, वहीं उनकी नीतियों में उसे सार्थक तरीके से असर डालने की क्षमता होती है। अंत में अर्थव्यवस्था को जिस चीज को हासिल करने में मदद करनी चाहिए वह है – घर-परिवार का बेहतर प्रबंधन जैसा कि इसके शब्द व्युत्पत्ति से स्पष्ट होता है। यह मानना शायद हमारे भविष्य का एक अति महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण होगा कि पीसीआर जैसे वित्तीय डेटा इन्फ्रास्ट्रक्चर में मूलभूत परिवर्तन से सूक्ष्म ऋण तक पहुंच में सुधार के साथ-साथ हमारे बच्चों और युवाओं के लिए स्कूली शिक्षा और कौशल संबंधी परिणामों में सुधार हो सकता है, लेकिन ऐसा होना चाहिए । पिछले साल मेरे बेटे के स्कूल में उसके पोस्टर ने मुझे माइकल एंजेलो के एक ऐसे सर्वोत्तम कृति से रु-ब-रु कराया जो इस बात को रेखांकित करता है कि हमें इस तरह की दृष्टि क्यों रखनी चाहिए और इसे वास्तविकता में बदलने के प्रयास करते रहना चाहिए। उसमें कहा गया है,

"हम में से अधिकांश के लिए सबसे बड़ा खतरा अपने लक्ष्य को बहुत बड़ा रखने और उसे पूरी तरह हासिल न कर पाने में नहीं है; बल्कि अपने लक्ष्य को बहुत छोटा रखकर उसे हासिल कर लेने में है।"